eISSN 3139-2377

RESEARCH WORK

A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal

Volume 02, Issue 03, March 2026

गांधीवाद और उसका राजनीतिक महत्वः समकालीन भारतीय लोकतंत्र एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ0 मनोज कुमार वर्मा[1]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान महामाया राजकीय महाविद्यालय, श्रावस्ती, उ0प्र0

Received: 20 March 2026 Accepted & Reviewed: 25 March 2026, Published: 30 March 2026

Abstract

महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन केवल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने विश्व राजनीति, लोकतंत्र, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय तथा शांति स्थापना के क्षेत्र में भी गहरा प्रभाव छोड़ा। गांधीवाद सत्य, अहिंसा, प्रेम, आत्मबल, स्वराज, सर्वोदय, ट्रस्टीशिप, विकेंद्रीकरण, ग्राम स्वराज, नैतिक राजनीति तथा सर्वधर्म समभाव जैसे सिद्धांतों पर आधारित एक समग्र जीवन–दर्शन है। गांधीजी ने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का साधन न मानकर नैतिकता एवं लोककल्याण का माध्यम माना। उनके अनुसार राजनीति धर्म से पृथक नहीं हो सकती, क्योंकि धर्म का आशय नैतिक मूल्यों से है, न कि संप्रदाय विशेष से। इसी कारण गांधीवादी राजनीति में सत्य, पारदर्शिता, सेवा, उत्तरदायित्व और जनसहभागिता को विशेष महत्व दिया गया है। वर्तमान समय में जब लोकतांत्रिक संस्थाएँ अनेक चुनौतियों जैसे राजनीतिक ध्रुवीकरण, भ्रष्टाचार, हिंसा, सामाजिक असमानता, पर्यावरण संकट, उपभोक्तावाद तथा नैतिक मूल्यों के ह्रासकृका सामना कर रही हैं, तब गांधीवादी विचारधारा पुनः प्रासंगिक होती दिखाई देती है। गांधी का सत्याग्रह केवल औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संघर्ष का साधन नहीं था, बल्कि वह अन्याय, शोषण एवं असमानता के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध की सार्वभौमिक पद्धति है। आज विश्व के अनेक देशों में नागरिक अधिकार आंदोलनों, पर्यावरण संरक्षण अभियानों, सामाजिक न्याय आंदोलनों तथा मानवाधिकार संघर्षों में गांधीवादी सिद्धांतों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह शोध–पत्र गांधीवाद की वैचारिक पृष्ठभूमि, उसके राजनीतिक महत्व तथा समकालीन लोकतांत्रिक व्यवस्था में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। अध्ययन में गुणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक स्रोतों पुस्तकों, शोध–पत्रों, सरकारी दस्तावेजों, आयोगों की रिपोर्टों एवं प्रतिष्ठित जर्नलों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि गांधीवाद केवल ऐतिहासिक विचारधारा नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य की लोकतांत्रिक राजनीति के लिए भी एक प्रभावी नैतिक एवं व्यावहारिक मार्गदर्शक सिद्ध हो सकता है। यदि शासन व्यवस्था, सार्वजनिक नीति तथा राजनीतिक नेतृत्व में गांधीवादी मूल्यों को समुचित स्थान दिया जाए, तो लोकतंत्र अधिक उत्तरदायी, समावेशी, पारदर्शी एवं जनोन्मुख बन सकता है।

प्रमुख शब्द– गांधीवाद, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, सर्वोदय, ग्राम स्वराज, नैतिक राजनीति, लोकतंत्र, विकेंद्रीकरण, ट्रस्टीशिप, सामाजिक न्याय, जनसहभागिता, सुशासन, मानवाधिकार

Introduction

बीसवीं शताब्दी के विश्व इतिहास में यदि किसी राजनीतिक विचारक ने राजनीति को नैतिकता, आध्यात्मिकता और जनकल्याण से जोड़कर नई दिशा प्रदान की, तो वह महात्मा मोहनदास करमचंद गांधी थे। गांधीजी केवल भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के नेता नहीं थे, बल्कि वे ऐसे वैश्विक चिंतक थे जिन्होंने राजनीतिक संघर्ष की प्रकृति को मूल रूप से परिवर्तित किया। उन्होंने हिंसा, युद्ध और शक्ति–संघर्ष पर आधारित राजनीति के स्थान पर सत्य, अहिंसा, आत्मबल तथा नैतिक शक्ति पर आधारित राजनीतिक दर्शन

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

प्रस्तुत किया। उनका मानना था कि राजनीतिक स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब वह सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय तथा नैतिक उत्तरदायित्व के साथ जुड़ी हो। गांधीवाद कोई संकीर्ण राजनीतिक विचारधारा नहीं, बल्कि जीवन के सभी क्षेत्रों राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, धर्म एवं संस्कृति को प्रभावित करने वाला समग्र दर्शन है। गांधीजी ने पश्चिमी औद्योगिक सभ्यता की अंधाधुंध प्रतिस्पर्धा, उपनिवेशवाद तथा हिंसात्मक राष्ट्रवाद की आलोचना करते हुए विकेंद्रीकृत, स्वावलंबी तथा मानवीय समाज की कल्पना प्रस्तुत की। उन्होंने ग्राम स्वराज, स्वदेशी, कुटीर उद्योग, श्रम की गरिमा, ट्रस्टीशिप तथा सर्वोदय जैसे सिद्धांतों के माध्यम से न्यायपूर्ण एवं समतामूलक व्यवस्था का मार्ग सुझाया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने संसदीय लोकतंत्र को अपनाया, जिसमें सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार, मौलिक अधिकार, पंचायती राज तथा सामाजिक न्याय जैसे अनेक तत्व गांधीवादी मूल्यों से प्रभावित रहे। यद्यपि स्वतंत्र भारत का विकास मॉडल औद्योगीकरण एवं केंद्रीकरण की दिशा में आगे बढ़ा, फिर भी पंचायती राज, ग्राम विकास, स्वच्छता, सामाजिक समरसता तथा जनभागीदारी जैसी अनेक नीतियों में गांधीवादी दृष्टिकोण स्पष्ट दिखाई देता है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में आतंकवाद, युद्ध, जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता, धार्मिक कट्टरता, लोकतांत्रिक संस्थाओं पर बढ़ते अविश्वास तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ विश्व समुदाय के समक्ष गंभीर चुनौती बन चुकी हैं। ऐसे समय में गांधीवाद केवल ऐतिहासिक विरासत नहीं, बल्कि शांति, न्याय, सह–अस्तित्व और सतत विकास का व्यावहारिक विकल्प प्रस्तुत करता है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस (02 अक्टूबर) की घोषणा तथा विश्वभर में अहिंसक आंदोलनों की सफलता गांधीवादी विचारों की सार्वभौमिक स्वीकार्यता को प्रमाणित करती है। समकालीन राजनीति में गांधीवाद की प्रासंगिकता का अध्ययन इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि लोकतंत्र केवल चुनाव तक सीमित नहीं होता; उसकी सफलता नागरिक उत्तरदायित्व, नैतिक नेतृत्व, पारदर्शिता तथा सामाजिक सहभागिता पर निर्भर करती है। गांधीवादी दर्शन इन सभी तत्वों को सुदृढ़ करने का आधार प्रदान करता है। इसी संदर्भ में यह शोध–पत्र गांधीवाद के मूल सिद्धांतों, उसके राजनीतिक महत्व तथा आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में उसकी उपयोगिता का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि– गांधीवाद का उद्भव औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की ऐतिहासिक परिस्थितियों में हुआ, किंतु इसकी वैचारिक जड़ें भारतीय दर्शन, जैन एवं बौद्ध अहिंसा, भगवद्गीता, उपनिषदों तथा पश्चिमी विचारकों विशेषकर लियो टॉलस्टॉय, जॉन रस्किन और हेनरी डेविड थोरो के चिंतन से भी प्रभावित थीं। गांधीजी ने इन विविध स्रोतों का समन्वय करते हुए एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा विकसित की, जिसका मूल उद्देश्य सत्ता प्राप्ति नहीं, बल्कि मानव समाज का नैतिक पुनर्निर्माण था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान गांधीजी ने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, नमक सत्याग्रह तथा भारत छोड़ो आंदोलन के माध्यम से यह सिद्ध किया कि अहिंसक जनांदोलन भी साम्राज्यवादी शक्तियों को चुनौती दे सकते हैं। इसके पश्चात विश्व के अनेक देशों में नागरिक अधिकार आंदोलनों, रंगभेद विरोधी संघर्षों तथा लोकतांत्रिक आंदोलनों ने गांधीवादी रणनीतियों को अपनाया। आज के लोकतांत्रिक समाज में राजनीतिक नैतिकता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा सामाजिक समरसता के प्रश्न पहले से अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। इसी कारण गांधीवाद के राजनीतिक महत्व का पुनर्मूल्यांकन आवश्यक हो गया है।

1.2 समस्या का प्रतिपादन– वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था अनेक गंभीर चुनौतियों से घिरी हुई है। राजनीतिक भ्रष्टाचार, सत्ता का केंद्रीकरण, चुनावी अपराधीकरण, सामाजिक ध्रुवीकरण, हिंसात्मक राजनीति, आर्थिक असमानता तथा नैतिक मूल्यों का ह्रास लोकतंत्र की गुणवत्ता को प्रभावित कर रहे हैं। ऐसे परिदृश्य में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या गांधीवादी राजनीतिक दर्शन इन चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

कर सकता है? यद्यपि गांधीवाद पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है, तथापि समकालीन भारतीय लोकतंत्र, सुशासन, राजनीतिक नैतिकता तथा वैश्विक राजनीति के संदर्भ में उसके राजनीतिक महत्व का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत सीमित है। यही इस शोध का मूल समस्या क्षेत्र है।

1.3 अध्ययन के उद्देश्य–

1 गांधीवाद की वैचारिक अवधारणा एवं मूल सिद्धांतों का अध्ययन करना।
2 गांधीवादी राजनीतिक दर्शन के प्रमुख तत्वों का विश्लेषण करना।
3 भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीवाद की भूमिका का मूल्यांकन करना।
4 भारतीय लोकतंत्र पर गांधीवादी विचारधारा के प्रभाव का अध्ययन करना।
5 ग्राम स्वराज, विकेंद्रीकरण एवं जनसहभागिता की अवधारणा का विश्लेषण करना।
6 समकालीन राजनीति में गांधीवादी मूल्यों की प्रासंगिकता का परीक्षण करना।
7 वैश्विक शांति एवं मानवाधिकार आंदोलनों में गांधीवादी प्रभाव का अध्ययन करना।
8 गांधीवादी राजनीतिक दर्शन की सीमाओं एवं चुनौतियों का विश्लेषण करना।
9 वर्तमान शासन व्यवस्था में गांधीवादी सिद्धांतों की उपयोगिता का मूल्यांकन करना।
10 लोकतांत्रिक सुदृढ़ीकरण हेतु गांधीवादी दृष्टिकोण पर आधारित सुझाव प्रस्तुत करना।

1.4 शोध प्रश्न–

1 गांधीवाद के प्रमुख राजनीतिक सिद्धांत कौन–कौन से हैं?
2 गांधीवादी राजनीति आधुनिक लोकतंत्र को किस प्रकार प्रभावित करती है?
3 क्या गांधीवादी दर्शन वर्तमान राजनीतिक चुनौतियों का समाधान प्रस्तुत करता है?
4 ग्राम स्वराज एवं विकेंद्रीकरण की अवधारणा आज कितनी प्रासंगिक है?
5 भारतीय लोकतंत्र में गांधीवादी मूल्यों का वास्तविक प्रभाव कितना दिखाई देता है?
6 वैश्विक स्तर पर गांधीवाद का राजनीतिक महत्व किस प्रकार विकसित हुआ है?
7 क्या नैतिक राजनीति की स्थापना गांधीवादी सिद्धांतों के माध्यम से संभव है?

1.5 परिकल्पनाएँ –

1 गांधीवादी राजनीतिक दर्शन समकालीन लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था को अधिक उत्तरदायी एवं पारदर्शी बनाने में सहायक है।
2 सत्य एवं अहिंसा पर आधारित राजनीतिक संस्कृति सामाजिक संघर्षों को कम करने में प्रभावी सिद्ध हो सकती है।
3 ग्राम स्वराज एवं विकेंद्रीकरण लोकतांत्रिक सहभागिता को सुदृढ़ करते हैं।
4 गांधीवादी नैतिक राजनीति भ्रष्टाचार एवं राजनीतिक अपराधीकरण को नियंत्रित करने में सहायक हो सकती है।
5 वैश्विक स्तर पर शांति, मानवाधिकार एवं नागरिक आंदोलनों में गांधीवादी विचारधारा आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

1.6 शोध प्रविधि – यह अध्ययन मुख्यतः गुणात्मक पर आधारित है। शोध में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा व्याख्यात्मक दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त सामग्री का

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

आलोचनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में महात्मा गांधी के मूल ग्रंथों हिंद स्वराज, सत्य के प्रयोग, यंग इंडिया, हरिजन तथा Collected Works of Mahatma Gandhi—के अतिरिक्त राजनीतिक विज्ञान, दर्शन, सार्वजनिक प्रशासन एवं भारतीय राजनीति से संबंधित पुस्तकों, शोध–पत्रों, सूचीबद्ध जर्नलों, विश्वविद्यालयीय शोध–प्रबंधों, सरकारी प्रकाशनों तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों की रिपोर्टों का उपयोग किया गया है। उपलब्ध साहित्य का विषयवस्तु एवं तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में प्रत्यक्ष सर्वेक्षण या प्राथमिक आँकड़ों का उपयोग नहीं किया गया है। तथापि, समकालीन लोकतांत्रिक प्रवृत्तियों, पंचायती राज, जनभागीदारी, सुशासन तथा राजनीतिक नैतिकता से संबंधित उपलब्ध द्वितीयक आँकड़ों एवं नीति–दस्तावेजों का संदर्भ लेकर निष्कर्ष विकसित किए गए हैं। शोध की विश्वसनीयता एवं वैधता सुनिश्चित करने के लिए बहु–स्रोत पद्धति अपनाई गई है तथा विभिन्न विद्वानों के विचारों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया है।

2– साहित्य समीक्षा एवं गांधीवाद का वैचारिक एवं सैद्धांतिक आधार–

2.1 साहित्य समीक्षा – गांधीवाद पर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक साहित्य उपलब्ध है। महात्मा गांधी के जीवन, राजनीतिक दर्शन, सामाजिक चिंतन, आर्थिक दृष्टिकोण तथा नैतिक मूल्यों पर अनेक विद्वानों ने विभिन्न दृष्टिकोणों से अध्ययन किया है। इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि गांधीवाद केवल स्वतंत्रता आंदोलन की रणनीति नहीं, बल्कि मानव जीवन एवं राजनीतिक व्यवस्था के लिए एक समग्र दार्शनिक दृष्टिकोण है। प्रस्तुत शोध के संदर्भ में प्रमुख विद्वानों के विचारों का संक्षिप्त विश्लेषण निम्नलिखित है।

महात्मा गांधी की पुस्तक **हिंद स्वराज** (1909) गांधीवादी राजनीतिक दर्शन का मूल आधार मानी जाती है। इस ग्रंथ में गांधीजी ने आधुनिक पाश्चात्य सभ्यता, औद्योगिक पूँजीवाद, केंद्रीकृत राज्य व्यवस्था तथा हिंसात्मक राजनीति की आलोचना करते हुए स्वराज, नैतिक शासन, ग्राम–आधारित अर्थव्यवस्था और आत्मनिर्भर समाज की अवधारणा प्रस्तुत की। गांधी के अनुसार वास्तविक स्वराज केवल राजनीतिक स्वतंत्रता नहीं, बल्कि व्यक्ति का आत्मसंयम, नैतिक स्वतंत्रता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व है। उन्होंने लोकतंत्र को मात्र चुनावी प्रक्रिया न मानकर नैतिक एवं जनकल्याणकारी व्यवस्था के रूप में परिभाषित किया। गांधीजी की आत्मकथा सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा उनके नैतिक एवं राजनीतिक जीवन का प्रामाणिक दस्तावेज है। इसमें उन्होंने सत्य, अहिंसा, आत्मानुशासन, ब्रह्मचर्य, सेवा तथा आत्मबल के सिद्धांतों का व्यावहारिक स्वरूप प्रस्तुत किया। यह पुस्तक स्पष्ट करती है कि गांधी के लिए राजनीति और नैतिकता एक–दूसरे से पृथक नहीं थे।

लुई फिशर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक The Life of Mahatma Gandhi में गांधी के व्यक्तित्व तथा नेतृत्व का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया है। फिशर के अनुसार गांधी ने राजनीति को नैतिकता का रूप प्रदान किया और विश्व को यह विश्वास दिलाया कि जनशक्ति किसी भी साम्राज्यवादी शक्ति से अधिक प्रभावशाली हो सकती है। वे गांधी के सत्याग्रह को बीसवीं शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक खोज मानते हैं।

बी.आर. नंदा ने Mahatma Gandhi: A Biography में गांधीजी के राजनीतिक विकास, स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भूमिका तथा राष्ट्रीय नेतृत्व का वस्तुनिष्ठ अध्ययन प्रस्तुत किया है। नंदा के अनुसार गांधी की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने राजनीति को जनता के दैनिक जीवन से जोड़ा तथा लोकतंत्र को ग्रामीण भारत तक पहुँचाया।

जूडिथ एम. ब्राउन ने Gandhi: Prisoner of Hope में गांधी के राजनीतिक नेतृत्व, संगठनात्मक क्षमता तथा वैचारिक विकास का आलोचनात्मक अध्ययन किया है। ब्राउन का मत है कि गांधी का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह था कि उन्होंने राजनीति में नैतिकता एवं जनसहभागिता को पुनः स्थापित किया।

रामचंद्र गुहा ने Gandhi Before India तथा Gandhi: The Years That Changed the World में गांधीजी के राजनीतिक एवं सामाजिक जीवन का ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार गांधीवाद भारतीय परंपरा तथा आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों का समन्वित दर्शन है।

राघवन अय्यर ने The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi में गांधीजी के राजनीतिक दर्शन का गहन दार्शनिक विश्लेषण किया है। उनके अनुसार गांधी की राजनीति का मूल आधार नैतिक शक्ति, सत्य, आत्मबल तथा आत्मसंयम है। वे मानते हैं कि गांधीवाद शक्ति की राजनीति के स्थान पर नैतिक शक्ति की राजनीति को स्थापित करता है।

भिखु पारेख ने Gandhi's Political Philosophy में गांधी के राजनीतिक विचारों की आधुनिक संदर्भ में पुनर्व्याख्या की है। पारेख के अनुसार गांधीवाद लोकतंत्र को केवल संस्थागत व्यवस्था नहीं मानता, बल्कि उसे सामाजिक नैतिकता एवं नागरिक उत्तरदायित्व से जोड़ता है।

डेनिस डाल्टन, ने Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action में यह स्पष्ट किया कि गांधी का सत्याग्रह निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं था, बल्कि यह सक्रिय, रचनात्मक तथा परिवर्तनकारी राजनीतिक शक्ति थी। उनके अनुसार अहिंसा दुर्बलों का नहीं, बल्कि आत्मविश्वासी एवं नैतिक रूप से दृढ़ व्यक्तियों का हथियार है।

जीन शार्प ने अहिंसात्मक संघर्ष की तकनीकों का विश्लेषण करते हुए गांधीवादी आंदोलनों को आधुनिक लोकतांत्रिक संघर्षों का आधार माना। उन्होंने यह सिद्ध किया कि अहिंसक जनांदोलन अनेक परिस्थितियों में सशस्त्र संघर्ष की अपेक्षा अधिक प्रभावी सिद्ध हो सकते हैं।

भारतीय विद्वानों में डी.जी. तेंदुलकर, के.जी. मशरूवाला, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण, जे.सी. कुमारप्पा, धर्मपाल, दादा धर्माधिकारी तथा काका कालेलकर ने गांधीवादी विचारों को विभिन्न आयामों में विकसित किया। विनोबा भावे ने सर्वोदय एवं भूदान आंदोलन के माध्यम से गांधीवादी सामाजिक दर्शन को व्यवहार में उतारा, जबकि जयप्रकाश नारायण ने संपूर्ण क्रांति के माध्यम से लोकतांत्रिक पुनर्निर्माण की दिशा में गांधीवादी मूल्यों का प्रयोग किया।

समकालीन शोधों में गांधीवाद की प्रासंगिकता का अध्ययन सुशासन, पंचायती राज, मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण, सतत विकास, संघर्ष समाधान, महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक न्याय जैसे क्षेत्रों में किया गया है। अनेक शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं कि वैश्वीकरण एवं उपभोक्तावाद के युग में गांधीवादी मूल्य नैतिक विकास एवं समावेशी लोकतंत्र की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

उपलब्ध साहित्य से यह स्पष्ट होता है कि गांधीवाद पर पर्याप्त शोध कार्य हुआ है, किन्तु समकालीन भारतीय लोकतंत्र, राजनीतिक नैतिकता, सुशासन तथा वैश्विक शासन व्यवस्था के संदर्भ में गांधीवाद के राजनीतिक महत्व का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित है। प्रस्तुत शोध इसी शोध–अंतर को भरने का प्रयास करता है।

2.2 गांधीवाद का वैचारिक एवं सैद्धांतिक आधार– गांधीवाद किसी एक पुस्तक, सिद्धांत अथवा राजनीतिक विचारधारा का नाम नहीं है। यह जीवन, समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था तथा नैतिकता का समन्वित दर्शन है, जिसकी आधारशिला सत्य, अहिंसा, प्रेम, आत्मबल, सेवा, समानता तथा मानव गरिमा पर आधारित है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

गांधीजी ने भारतीय आध्यात्मिक परंपरा, जैन एवं बौद्ध दर्शन, भगवद्गीता, उपनिषदों तथा आधुनिक पश्चिमी विचारकों के चिंतन का समन्वय करते हुए एक ऐसी राजनीतिक विचारधारा विकसित की, जिसका उद्देश्य केवल शासन परिवर्तन नहीं, बल्कि व्यक्ति एवं समाज का नैतिक पुनर्निर्माण था।

1. सत्य– गांधीजी के अनुसार सत्य ही ईश्वर है। उनके लिए सत्य केवल तथ्यात्मक सत्य नहीं, बल्कि नैतिक एवं आध्यात्मिक सत्य भी है। राजनीति में सत्य का अर्थ पारदर्शिता, ईमानदारी, उत्तरदायित्व तथा जनहित के प्रति निष्ठा है। गांधी का मानना था कि यदि राजनीति सत्य से विमुख हो जाए तो वह केवल सत्ता संघर्ष बनकर रह जाती है।

2. अहिंसा – अहिंसा गांधीवादी दर्शन का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है। गांधीजी ने अहिंसा को केवल शारीरिक हिंसा का अभाव नहीं माना, बल्कि मन, वचन और कर्म से किसी के प्रति घृणा न रखने का सकारात्मक सिद्धांत बताया। राजनीतिक संघर्ष में अहिंसा का प्रयोग उन्होंने सत्याग्रह, असहयोग, बहिष्कार तथा सविनय अवज्ञा के माध्यम से किया। आज भी विश्वभर में नागरिक अधिकार आंदोलनों, पर्यावरण आंदोलनों तथा लोकतांत्रिक संघर्षों में अहिंसक प्रतिरोध प्रभावी माना जाता है।

3. सत्याग्रह– सत्याग्रह गांधीजी की मौलिक राजनीतिक देन है। इसका शाब्दिक अर्थ है, सत्य के प्रति आग्रह। यह अन्याय के विरुद्ध अहिंसक प्रतिरोध की ऐसी पद्धति है जिसमें विरोधी को शारीरिक बल से नहीं, बल्कि नैतिक शक्ति से प्रभावित किया जाता है। सत्याग्रह का उद्देश्य प्रतिद्वंद्वी का विनाश नहीं, बल्कि उसके हृदय परिवर्तन द्वारा न्याय की स्थापना है।

4. स्वराज – गांधीजी के अनुसार स्वराज केवल विदेशी शासन से मुक्ति नहीं, बल्कि आत्म–शासन, आत्म–अनुशासन एवं नैतिक स्वतंत्रता है। उन्होंने व्यक्तिगत स्वराज, सामाजिक स्वराज तथा राजनीतिक स्वराज, तीनों को समान महत्व दिया। उनके विचार में लोकतंत्र तभी सफल होगा जब नागरिक स्वयं उत्तरदायी एवं अनुशासित होंगे।

5. ग्राम स्वराज – गांधीजी ने भारत के विकास का आधार ग्रामों को माना। उनके अनुसार प्रत्येक गाँव आत्मनिर्भर, लोकतांत्रिक एवं आर्थिक रूप से सक्षम होना चाहिए। ग्राम पंचायतें स्थानीय शासन का आधार बनें तथा निर्णय प्रक्रिया में जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित हो। वर्तमान पंचायती राज व्यवस्था इसी अवधारणा से प्रेरित मानी जाती है।

6. सर्वोदय– सर्वोदय का अर्थ है, सभी का उदय, सभी का कल्याण। गांधीजी का मानना था कि विकास तभी सार्थक है जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे। यह सिद्धांत सामाजिक न्याय, समावेशी विकास एवं कल्याणकारी राज्य की आधारशिला है।

7. ट्रस्टीशिप – गांधीजी ने आर्थिक असमानता को दूर करने के लिए ट्रस्टीशिप का सिद्धांत प्रस्तुत किया। उनके अनुसार धनवान व्यक्ति समाज की संपत्ति के संरक्षक हैं, स्वामी नहीं। इसलिए उन्हें अपनी अतिरिक्त संपत्ति का उपयोग समाज के कल्याण हेतु करना चाहिए। आधुनिक कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा में इस सिद्धांत की झलक मिलती है।

8. स्वदेशी – गांधीजी स्वदेशी को केवल आर्थिक नीति नहीं, बल्कि आत्मनिर्भरता एवं राष्ट्रीय सम्मान का प्रतीक मानते थे। उन्होंने स्थानीय उत्पादन, कुटीर उद्योग तथा लघु उद्योगों को प्रोत्साहित किया। वर्तमान आत्मनिर्भर भारत जैसी नीतियों में भी इस विचार की प्रासंगिकता देखी जा सकती है।

9. विकेंद्रीकरण – गांधीजी सत्ता एवं संसाधनों के अत्यधिक केंद्रीकरण के विरोधी थे। उनका मानना था कि वास्तविक लोकतंत्र तभी संभव है जब निर्णय लेने की शक्ति स्थानीय स्तर तक पहुँचे। इसलिए उन्होंने ग्राम पंचायतों एवं स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को लोकतंत्र की आधारशिला माना।

10. सर्वधर्म समभाव – गांधीजी ने सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान का सिद्धांत प्रतिपादित किया। उनके अनुसार धर्म का अर्थ नैतिक जीवन है, न कि संकीर्ण सांप्रदायिकता। उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता, संवाद एवं सामाजिक समरसता को लोकतंत्र की आवश्यक शर्त माना।

11. रचनात्मक कार्यक्रम – गांधीजी का विश्वास था कि केवल राजनीतिक आंदोलन पर्याप्त नहीं हैं। समाज में स्थायी परिवर्तन के लिए शिक्षा, स्वच्छता, महिला सशक्तिकरण, अस्पृश्यता उन्मूलन, ग्रामोद्योग, खादी, स्वास्थ्य तथा सामुदायिक विकास जैसे रचनात्मक कार्यक्रमों को समान महत्व दिया जाना चाहिए।

12. नैतिक राजनीति – गांधीजी ने राजनीति को नैतिकता से पृथक करने का विरोध किया। उनका प्रसिद्ध कथन था कि नैतिकता से रहित राजनीति मृत्यु का जाल है। उनके अनुसार सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, सेवा, त्याग एवं उत्तरदायित्व लोकतांत्रिक शासन की सफलता के लिए अनिवार्य हैं।

3.3 समग्र विश्लेषण– गांधीवाद का वैचारिक ढाँचा व्यक्ति, समाज और राज्य के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। यह सत्ता–केंद्रित राजनीति के स्थान पर नागरिक–केंद्रित लोकतंत्र की स्थापना का समर्थन करता है। गांधीवादी सिद्धांत सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता, पर्यावरणीय संतुलन, शांति, मानवाधिकार तथा सतत विकास जैसे समकालीन वैश्विक विमर्शों से गहरे रूप में जुड़े हुए हैं। यही कारण है कि गांधीवाद आज भी केवल इतिहास का विषय नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक शासन, सुशासन और वैश्विक शांति की दिशा में एक जीवंत एवं प्रासंगिक राजनीतिक दर्शन के रूप में स्वीकार किया जाता है।

3. गांधीवाद का राजनीतिक महत्व,

3.1 गांधीवाद का राजनीतिक महत्व– महात्मा गांधी का राजनीतिक चिंतन आधुनिक राजनीतिक दर्शन में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उन्होंने राजनीति को केवल सत्ता प्राप्ति का माध्यम नहीं माना, बल्कि उसे नैतिकता, जनसेवा और सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाया। गांधीवादी राजनीति का मूल उद्देश्य व्यक्ति, समाज और राज्य के मध्य ऐसा संतुलन स्थापित करना था जिसमें न्याय, समानता, स्वतंत्रता और उत्तरदायित्व का समन्वय हो। गांधी का राजनीतिक दर्शन इस धारणा पर आधारित था कि यदि साधन शुद्ध होंगे तो साध्य भी शुद्ध होगा। इसलिए उन्होंने राजनीति में सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, नैतिक नेतृत्व और जनसहभागिता को अनिवार्य माना।

1. राजनीति का नैतिकीकरण– गांधीजी का सबसे बड़ा योगदान राजनीति का नैतिकीकरण था। उन्होंने यह स्थापित किया कि राजनीति का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि समाज का नैतिक उत्थान करना भी है। उनके अनुसार सार्वजनिक जीवन में सत्य, ईमानदारी, पारदर्शिता और उत्तरदायित्व लोकतंत्र की सफलता के लिए आवश्यक हैं। आज जब राजनीति पर भ्रष्टाचार, अवसरवाद, धनबल और बाहुबल के प्रभाव की चर्चा होती है, तब गांधीवादी नैतिक राजनीति एक व्यवहारिक विकल्प के रूप में सामने आती है।

2. लोकतंत्र की पुनर्व्याख्या– गांधी के लिए लोकतंत्र केवल बहुमत का शासन नहीं था। उनका मानना था कि वास्तविक लोकतंत्र वह है जिसमें समाज के सबसे कमजोर व्यक्ति की आवाज़ भी सुनी जाए। उन्होंने लोकतंत्र को जनभागीदारी, विकेंद्रीकरण, नैतिक नेतृत्व और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा। यह दृष्टिकोण आज समावेशी शासन की अवधारणा से मेल खाता है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

3. अहिंसक राजनीतिक संघर्ष– गांधीजी ने सिद्ध किया कि बिना हिंसा के भी राजनीतिक परिवर्तन संभव है। सत्याग्रह, असहयोग, सविनय अवज्ञा और शांतिपूर्ण जनांदोलन ने औपनिवेशिक शासन को चुनौती दी। इस पद्धति ने विश्वभर में लोकतांत्रिक आंदोलनों को नई दिशा दी। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी संघर्ष, अमेरिका का नागरिक अधिकार आंदोलन तथा अनेक लोकतांत्रिक आंदोलनों पर गांधीवादी पद्धति का स्पष्ट प्रभाव देखा गया।

4. जनशक्ति का महत्व– गांधीजी ने यह स्पष्ट किया कि लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति जनता में निहित होती है। उन्होंने ग्रामीण भारत, महिलाओं, श्रमिकों, किसानों, युवाओं और वंचित वर्गों को स्वतंत्रता आंदोलन का सक्रिय भाग बनाया। इससे भारतीय राजनीति में जनसहभागिता का विस्तार हुआ और लोकतांत्रिक संस्कृति मजबूत हुई।

3.2 भारतीय लोकतंत्र पर गांधीवाद का प्रभाव– स्वतंत्र भारत का संविधान पूर्णतः गांधीवादी दस्तावेज़ नहीं है, किन्तु उसके अनेक प्रावधान गांधीवादी मूल्यों से प्रेरित हैं। भारतीय लोकतंत्र की कई संस्थाएँ और नीतियाँ गांधीवादी दृष्टिकोण का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव दर्शाती हैं।

(क) पंचायती राज एवं विकेंद्रीकरण– गांधीजी ने ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की थी। उनका विश्वास था कि प्रत्येक गाँव आत्मनिर्भर लोकतांत्रिक इकाई बने। 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन के माध्यम से स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया, जिसने गांधीवादी विकेंद्रीकरण की अवधारणा को संस्थागत स्वरूप दिया।

(ख) सामाजिक न्याय– गांधीजी ने अस्पृश्यता उन्मूलन, सामाजिक समरसता तथा समान अवसरों का समर्थन किया। स्वतंत्र भारत में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़े वर्गों एवं महिलाओं के संरक्षण तथा प्रतिनिधित्व संबंधी नीतियाँ सामाजिक न्याय की दिशा में गांधीवादी चिंतन से प्रभावित मानी जाती हैं।

(ग) कल्याणकारी राज्य– भारतीय संविधान के नीति–निर्देशक तत्व सामाजिक एवं आर्थिक न्याय पर आधारित कल्याणकारी राज्य की स्थापना का लक्ष्य निर्धारित करते हैं। यह सर्वोदय एवं लोककल्याण की गांधीवादी अवधारणा के निकट है।

(घ) स्वच्छता एवं जनभागीदारी– गांधीजी स्वच्छता को स्वतंत्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। वर्तमान में स्वच्छता, सामुदायिक स्वास्थ्य, जन–जागरूकता एवं नागरिक उत्तरदायित्व से संबंधित अनेक अभियान गांधीवादी दृष्टिकोण की समकालीन अभिव्यक्ति हैं।

3.3 समकालीन राजनीति में गांधीवाद की प्रासंगिकता– वर्तमान विश्व अनेक जटिल चुनौतियों का सामना कर रहा है। राजनीतिक ध्रुवीकरण, धार्मिक कट्टरता, आर्थिक असमानता, पर्यावरणीय संकट, लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अविश्वास, भ्रष्टाचार तथा हिंसा लोकतांत्रिक शासन के समक्ष गंभीर प्रश्न खड़े करते हैं। ऐसे समय में गांधीवाद की प्रासंगिकता अनेक कारणों से बढ़ जाती है।

1. राजनीतिक भ्रष्टाचार– गांधीजी ने सार्वजनिक जीवन में नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया। यदि राजनीतिक दलों, जनप्रतिनिधियों और प्रशासन में गांधीवादी नैतिक मूल्यों का पालन हो तो भ्रष्टाचार में कमी लाई जा सकती है।

2. सामाजिक ध्रुवीकरण– जाति, धर्म, भाषा और क्षेत्र के आधार पर बढ़ते सामाजिक तनाव लोकतंत्र को कमजोर करते हैं। गांधीजी का सर्वधर्म समभाव तथा सामाजिक समरसता का सिद्धांत ऐसे तनावों को कम करने का प्रभावी आधार प्रदान करता है।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

3. पर्यावरणीय संकट– गांधीजी ने आवश्यकता–आधारित उपभोग का समर्थन किया। उनका प्रसिद्ध विचार कि प्रकृति प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकता पूरी कर सकती है, किन्तु किसी एक व्यक्ति के लालच को नहीं, सतत विकास की आधुनिक अवधारणा से मेल खाता है।

4. वैश्विक शांति– विश्व में युद्ध, आतंकवाद एवं हिंसात्मक संघर्षों की बढ़ती घटनाएँ गांधीवादी अहिंसा की आवश्यकता को पुनः रेखांकित करती हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 2 अक्टूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया जाना गांधीवादी विचारों की वैश्विक स्वीकार्यता का प्रमाण है।

5. लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व– गांधीजी का मानना था कि लोकतंत्र केवल अधिकारों पर नहीं, बल्कि कर्तव्यों पर भी आधारित होना चाहिए। आज नागरिक उत्तरदायित्व, पारदर्शिता, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं जनसहभागिता की चर्चा इसी विचारधारा को पुष्ट करती है।

3.4 वैश्विक राजनीति में गांधीवाद का प्रभाव– गांधीवादी विचारों ने विश्व राजनीति को भी गहराई से प्रभावित किया है। मार्टिन लूथर किंग जूनियर ने अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन में गांधीवादी अहिंसा को अपनाया। नेल्सन मंडेला ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी संघर्ष में गांधीवादी विचारों से प्रेरणा प्राप्त की। दलाई लामा ने शांति एवं करुणा की राजनीति में गांधीवादी दृष्टिकोण का समर्थन किया। पोलैंड, म्यांमार, फिलीपींस, चेकोस्लोवाकिया तथा अनेक अन्य देशों के लोकतांत्रिक आंदोलनों में भी अहिंसक संघर्ष की रणनीतियों का प्रभाव देखा गया।

3.5 गांधीवाद और सुशासन – सुशासन की अवधारणा में पारदर्शिता, जवाबदेही, विधि का शासन, सहभागिता, समानता एवं दक्षता को महत्वपूर्ण माना जाता है। गांधीवादी राजनीतिक दर्शन इन सभी सिद्धांतों को नैतिक आधार प्रदान करता है।

तालिका–01
सुशासन का सिद्धांतगांधीवादी दृष्टिकोण

पारदर्शिता	सत्य
जवाबदेही	नैतिक उत्तरदायित्व
जनसहभागिता	ग्राम स्वराज
समानता	सर्वोदय
सामाजिक न्याय	अस्पृश्यता उन्मूलन
विकेंद्रीकरण	पंचायत आधारित शासन
सतत विकास	स्वदेशी एवं सीमित उपभोग

3.6 डेटा विश्लेषण– इस अध्ययन में प्राथमिक सर्वेक्षण के स्थान पर द्वितीयक स्रोतों, सरकारी रिपोर्टों, संवैधानिक प्रावधानों तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं के विकास से संबंधित उपलब्ध साहित्य का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण से निम्न प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त होते हैं।

तालिका 02

गांधीवादी सिद्धांत एवं वर्तमान राजनीतिक उपयोगिता

क्र0	गांधीवादी सिद्धांत	वर्तमान उपयोगिता	प्रभाव
1	सत्य	पारदर्शी शासन	उच्च
2	अहिंसा	सामाजिक संघर्ष समाधान	अत्यधिक
3	सत्याग्रह	शांतिपूर्ण आंदोलन	अत्यधिक
4	ग्राम स्वराज	स्थानीय शासन	उच्च
5	सर्वोदय	समावेशी विकास	उच्च
6	ट्रस्टीशिप	CSR एवं सामाजिक उत्तरदायित्व	मध्यम से उच्च
7	स्वदेशी	आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था	उच्च
8	सर्वधर्म समभाव	सामाजिक सद्भाव	अत्यधिक

तालिका 03

समकालीन राजनीतिक चुनौतियाँ एवं गांधीवादी समाधान

चुनौती	गांधीवादी समाधान
भ्रष्टाचार	नैतिक नेतृत्व
राजनीतिक हिंसा	अहिंसा
सामाजिक विभाजन	सर्वधर्म समभाव
सत्ता का केंद्रीकरण	विकेंद्रीकरण
आर्थिक असमानता	ट्रस्टीशिप
बेरोजगारी	ग्रामोद्योग एवं स्वावलंबन
पर्यावरण संकट	सीमित उपभोग एवं सतत विकास
लोकतांत्रिक अविश्वास	जनसहभागिता

विश्लेषणात्मक चर्चा – उपलब्ध साहित्य तथा द्वितीयक आँकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि गांधीवाद आज भी केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक शासन की गुणवत्ता को सुधारने वाली एक जीवंत वैचारिक प्रणाली है। भारतीय लोकतंत्र में पंचायती राज, जनभागीदारी, सामाजिक न्याय, स्वच्छता, ग्राम विकास तथा समावेशी नीति–निर्माण जैसे अनेक क्षेत्र गांधीवादी सिद्धांतों से प्रभावित दिखाई देते हैं।

eISSN 3139-2377
RESEARCH WORK
A Monthly, Open Access, Peer Reviewed International Research Journal
Volume 02, Issue 03, March 2026

हालाँकि, यह भी स्पष्ट है कि वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था गांधीवादी आदर्शों से पूर्णतः मेल नहीं खाती। राजनीति में धनबल, जातीय ध्रुवीकरण, चुनावी अपराधीकरण, भ्रष्टाचार, उपभोक्तावाद तथा सत्ता का अत्यधिक केंद्रीकरण गांधीवादी मूल्यों के विपरीत प्रवृत्तियाँ हैं। इससे लोकतंत्र की नैतिक गुणवत्ता प्रभावित होती है। दूसरी ओर, वैश्विक स्तर पर शांति, मानवाधिकार, पर्यावरण संरक्षण तथा नागरिक अधिकार आंदोलनों में गांधीवादी विचारों की निरंतर उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि अहिंसा और सत्याग्रह आज भी प्रभावी राजनीतिक उपकरण हैं। डिजिटल युग में भी शांतिपूर्ण जनआंदोलन, सामाजिक अभियान तथा नागरिक सहभागिता गांधीवादी पद्धतियों की समकालीन अभिव्यक्ति माने जा सकते हैं।

इस प्रकार अध्ययन की सभी प्रमुख परिकल्पनाएँ व्यापक रूप से पुष्ट होती हैं। विशेष रूप से यह निष्कर्ष उभरकर सामने आता है कि नैतिक राजनीति, विकेंद्रीकरण, जनसहभागिता तथा सामाजिक उत्तरदायित्व लोकतंत्र की गुणवत्ता बढ़ाने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गांधीवाद इन सभी तत्वों को एक समन्वित राजनीतिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत करता है और इसी कारण उसका राजनीतिक महत्व आज भी अक्षुण्ण बना हुआ है।

निष्कर्ष – प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि गांधीवाद केवल भारत के स्वतंत्रता संग्राम का वैचारिक आधार नहीं था, बल्कि वह एक समग्र राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक दर्शन है जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। महात्मा गांधी ने सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, स्वराज, ग्राम स्वराज, सर्वोदय, ट्रस्टीशिप, स्वदेशी, विकेंद्रीकरण तथा सर्वधर्म समभाव जैसे सिद्धांतों के माध्यम से राजनीति को नैतिक आधार प्रदान किया। उनका उद्देश्य सत्ता परिवर्तन नहीं, बल्कि व्यक्ति, समाज और राज्य के नैतिक पुनर्निर्माण द्वारा न्यायपूर्ण एवं समावेशी व्यवस्था की स्थापना करना था।

अध्ययन में उपलब्ध साहित्य, द्वितीयक आँकड़ों तथा समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों के विश्लेषण से यह तथ्य उभरकर सामने आया कि वर्तमान लोकतांत्रिक व्यवस्था जिन चुनौतियों जैसे भ्रष्टाचार, राजनीतिक हिंसा, सामाजिक धुंवीकरण, आर्थिक असमानता, पर्यावरण संकट, नैतिक मूल्यों के ह्रास तथा सत्ता के अत्यधिक केंद्रीकरण का सामना कर रही है, उनके समाधान में गांधीवादी विचारधारा महत्त्वपूर्ण वैचारिक आधार प्रदान करती है। गांधीजी का यह विश्वास कि साधनों की पवित्रता के बिना साध्य की पवित्रता संभव नहीं है, आज की लोकतांत्रिक राजनीति के लिए अत्यंत प्रासंगिक सिद्ध होता है। भारतीय लोकतंत्र के विकास में गांधीवादी चिंतन का प्रभाव अनेक रूपों में दिखाई देता है। पंचायती राज व्यवस्था, विकेंद्रीकरण, सामाजिक न्याय, नागरिक सहभागिता, स्वच्छता अभियान, ग्राम विकास तथा कल्याणकारी राज्य की अवधारणा गांधीवादी दर्शन से प्रेरित हैं। यद्यपि स्वतंत्र भारत ने औद्योगिक विकास एवं केंद्रीकृत प्रशासन को भी अपनाया, फिर भी लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण तथा स्थानीय स्वशासन की संस्थाएँ गांधीजी के ग्राम स्वराज के आदर्श को आंशिक रूप से मूर्त रूप प्रदान करती हैं। शोध में प्रतिपादित परिकल्पनाओं का परीक्षण यह संकेत देता है कि गांधीवादी सिद्धांत लोकतांत्रिक शासन को अधिक उत्तरदायी, पारदर्शी एवं जनोन्मुख बनाने की क्षमता रखते हैं। सत्य एवं अहिंसा पर आधारित राजनीतिक संस्कृति सामाजिक संघर्षों को कम करने में सहायक हो सकती है। ग्राम स्वराज एवं विकेंद्रीकरण लोकतांत्रिक सहभागिता को बढ़ाते हैं। नैतिक राजनीति भ्रष्टाचार एवं राजनीतिक अपराधीकरण को नियंत्रित करने की दिशा में प्रभावी आधार प्रदान कर सकती है। इसी प्रकार वैश्विक स्तर पर शांति, मानवाधिकार एवं लोकतांत्रिक आंदोलनों में गांधीवादी विचारधारा की निरंतर उपस्थिति उसकी सार्वभौमिक उपयोगिता को सिद्ध करती है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि गांधीवाद को केवल ऐतिहासिक विरासत के रूप में देखना उचित नहीं होगा। बदलते वैश्विक परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन, सतत विकास, कॉर्पोरेट उत्तरदायित्व, सामाजिक समावेशन तथा डिजिटल लोकतंत्र जैसे नए विषयों के संदर्भ में गांधीवादी सिद्धांत नई व्याख्याओं के साथ अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। गांधीजी द्वारा प्रतिपादित सीमित उपभोग, पर्यावरणीय संतुलन, आत्मनिर्भरता तथा मानवीय विकास की अवधारणाएँ संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ भी सामंजस्य रखती हैं। यद्यपि गांधीवादी विचारधारा की कुछ व्यावहारिक सीमाएँ भी हैं। वैश्विक पूँजीवाद, तीव्र औद्योगीकरण, तकनीकी प्रतिस्पर्धा तथा जटिल अंतरराष्ट्रीय संबंधों के युग में गांधी के कुछ आर्थिक विचारों का पूर्ण अनुप्रयोग कठिन प्रतीत होता है। फिर भी उनके मूल सिद्धांत सत्य, अहिंसा, नैतिक नेतृत्व, सामाजिक न्याय, विकेंद्रीकरण तथा जनसहभागिता आज भी लोकतांत्रिक शासन के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत हैं।

अंततः यह कहा जा सकता है कि गांधीवाद किसी विशेष कालखंड की विचारधारा नहीं, बल्कि मानवता की साझा नैतिक विरासत है। यदि शासन, राजनीति, प्रशासन, शिक्षा तथा नागरिक जीवन में गांधीवादी मूल्यों का व्यवहारिक समावेश किया जाए, तो लोकतंत्र अधिक उत्तरदायी, समावेशी, न्यायपूर्ण एवं स्थायी बन सकता है। यही गांधीवाद का वास्तविक राजनीतिक महत्व है और यही उसकी समकालीन प्रासंगिकता भी।

अध्ययन के आधार पर सुझाव (Recommendations)—

राजनीतिक दलों के लिए नैतिक आचार संहिता को अधिक प्रभावी बनाया जाए तथा उसके अनुपालन की स्वतंत्र व्यवस्था विकसित की जाए।

विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में गांधीवादी राजनीतिक दर्शन, नैतिक नेतृत्व एवं नागरिक उत्तरदायित्व पर आधारित पाठ्यक्रमों को प्रोत्साहित किया जाए।

पंचायती राज एवं नगरीय स्थानीय निकायों को अधिक वित्तीय एवं प्रशासनिक स्वायत्तता प्रदान कर ग्राम स्वराज की भावना को सुदृढ़ किया जाए।

चुनावी सुधारों के माध्यम से धनबल, बाहुबल एवं आपराधिक राजनीति पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया जाए।

शासन व्यवस्था में पारदर्शिता, ई—गवर्नेंस एवं सामाजिक लेखा परीक्षा को व्यापक रूप से लागू किया जाए।

सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने के लिए सर्वधर्म समभाव, संवाद एवं सांप्रदायिक सद्भाव पर आधारित कार्यक्रम नियमित रूप से संचालित किए जाएँ।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने हेतु कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, स्थानीय उद्यम एवं आत्मनिर्भर उत्पादन प्रणाली को प्रोत्साहन दिया जाए।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को गांधीजी के ट्रस्टीशिप सिद्धांत के अनुरूप सामाजिक विकास कार्यक्रमों से अधिक प्रभावी ढंग से जोड़ा जाए।

पर्यावरण संरक्षण हेतु सतत विकास, सीमित उपभोग एवं प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग को सार्वजनिक नीति का प्रमुख आधार बनाया जाए।

नागरिकों में अहिंसक संवाद, संवैधानिक मूल्यों एवं लोकतांत्रिक संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलाए जाएँ।

सार्वजनिक प्रशासन में नैतिक प्रशिक्षण, ईमानदारी एवं उत्तरदायित्व को सेवा–प्रशिक्षण का अनिवार्य भाग बनाया जाए।

विश्वविद्यालयों एवं शोध संस्थानों में गांधीवादी चिंतन एवं समकालीन शासन व्यवस्था पर अंतर्विषयी शोध को प्रोत्साहित किया जाए।

भारत की विदेश नीति एवं वैश्विक शांति पहलों में अहिंसा, संवाद, सहयोग एवं मानवीय कूटनीति के गांधीवादी सिद्धांतों को और अधिक प्रभावी रूप से अपनाया जाए।

संदर्भ सूची –

1. Brown J- M- 1989- Gandhi: Prisoner of Hope- Yale University Press
2. Dalton, D- 1993- Mahatma Gandhi: Nonviolent Power in Action- Columbia University Press
3. Fischer, L- 1950- The Life of Mahatma Gandhi- Harper & Brothers
4. Gandhi, M- K- 1909@1938- Hind Swaraj- Navajivan Publishing House
5. Gandhi, M- K- 1927- An Autobiography: The Story of My Experiments with Truth- Navajivan Publishing House
6. Gandhi, M- K- 1958–1994- The Collected Works of Mahatma Gandhi Vols- 1–100- Publications Division] Government of India
7. Gandhi, M- K- 1941- Constructive Programme: Its Meaning and Place- Navajivan Publishing House
8. Guha, R- 2013- Gandhi Before India- Penguin Random House
9. Guha] R- 2018- Gandhi: The Years That Changed the World- Penguin Random House
10. Iyer, R- N- 1973- The Moral and Political Thought of Mahatma Gandhi- Oxford University Press
11. Kumarappa, J- C- 1945- Economy of Permanence- Sarva Seva Sangh
12. Mashruwala] K- G- 1951- Gandhi and Marx- Navajivan Publishing House
13. Nanda, B- R- 1958- Mahatma Gandhi: A Biography- Oxford University Press
14. Parekh, B- 1997- Gandhi's Political Philosophy- Macmillan
15. Sharp, G- 1973- The Politics of Nonviolent Action- Porter Sargent Publishers
16. Tendulkar, D- G- 1951–1954- Mahatma: Life of Mohandas Karamchand Gandhi,Vols- 1–8,- Publications Division
17. Thoreau] H- D- 1849- Civil Disobedience- Ticknor and Fields
18. Tolstoy] L- 1894- The Kingdom of God Is Within You- Cassell
19. Ruskin, J- 1860- Unto This Last- Smith] Elder & Co
20. Vinoba Bhave- 1958- Bhoodan Yajna- Sarva Seva Sangh
21. Jayaprakash Narayan- 1978- Towards Total Revolution- Popular Prakashan
22. Ministry of Panchayati Raj- 2024- Annual Report- Government of India
23. Government of India- 1950- The Constitution of India- Ministry of Law and Justice
24. United Nations- 2015- Transforming Our World: The 2030 Agenda for Sustainable Development
25. Dharampal- 1998- The Beautiful Tree- Other India Press
26. Hardiman, D- 2003- Gandhi in His Time and Ours- Permanent Black
27. Chatterjee, M- 1983- Gandhi's Religious Thought- University of Notre Dame Press
28. Parel] A- J- Ed-- 1997- Hind Swaraj and Other Writings- Cambridge University Press
29प Rudolph, L- I- & Rudolph S- H- 2006- Postmodern Gandhi and Other Essays- Oxford University Press